Airo International Research Journal
Peer Reviewed Multidisciplinary Indexed Journal
ISSN: 2320-3714
Volume:23 Issue:1 October 2020

अहिल्या महाकाव्य मेंनारीजगत् (जीवन) की समीक्षा

कुमारीअमृता

शोधार्थी श्री सत्य साई यूनिर्व्हसिटी ऑफ टेकनोलॉजीएण्ड मेडिकल साइन्सेस, सीहोर

डॉ0.तबस्सुम खान

मार्गदर्शकश्रीसत्य साई यूनिर्व्हसिटी ऑफ टेकनोलॉजीएण्ड मेडिकल साइन्सेस, सीहोर

सारांश

कवि घमण्डी राम अहिल्या प्रबन्ध काव्य में नारी जीवन की बहुत सारी समस्याओं के ऊपर प्रश्न उठाया। उन्होंने अपनी भूमिका में ही लिखते हैं– ''अहिल्या आउ रिसी कन्या के माध्यम से नारी–''शोषण, नारी–उत्पीड़न, नारी–दुर्गति, नारी–व्यंग, नारी–प्रताड़ना के चर्चा दरसावल गेल हे। विद्रोह आन्दोलन के रूप में लेवलचाहित हे। पुरूष समाज के वर्चस्व के लिए खिलाफ एक सशक्त विद्रोह दरसावल गेल हे। नारी समाज संगठित हो रहल हे बाकि पुरूष वर्ग (ओह समय के रिसी–मुनी, देवता आदि) अप्पन वर्चस्व बचावे ला तरह–तरह के चाल चलऽ हे। पुरूष वर्ग भी संगठित हो जा हे। नारी वर्ग पर तरह–तरह के प्रतिबन्ध आउ अंकुश लगा देवलल जा हे। इन्द्र के खिलाफत करे के हियाकत केकरो में देखाई न देवऽ हे। देवता लोग इन्द्र के ही मदद करऽ हथ आउ लिंग विहीन हो गेला पर भेड़ा के लिंग (अण्डकोष) लगा देवल जाहें गौतम भयभीत हथ। चतुराई तो कैलन कि अहिल्या ब्रह्मा के वापुस कर दे लन। न रहत बाँस न बाजत बंसुरी। बाकि में फिन ओहि अहिल्या ढोल मढ़ा जा हे। लाचार होके ढोल बजावे पड़ हे। अहिल्या बड़ा पवित्र भाव से दाम्पत्य जीवन बीता रहल हे। गौतम किसी के तपस्या में सहयोग दे रहल हे। लेकिन इन्द्र के प्रति विद्रोह जारी हे। ऊ निशचिन्त भाव से आश्रम में रह रहल हे। जेकर पति अतना बड़ा तपस्वी ओकरा कउन बात के डर–भय–चिन्ता

बाकि इन्द्र ओकरा साथ बेभिचार करे में सफल हो जा हथ। गौतम के सराप से ऊ पत्थर बन जास हे। शीलवत जीवन बिता रहल हे।''

मुख्यशब्द:महाकाव्य,नारी जीवन,अहिल्या,शोषण

प्रस्तावना

यह काव्य अहिल्या ग्यारह सर्गों में विभक्त है जिसमें अहिल्या के जन्म से अहिल्या उद्धार (श्री राम द्वारा) का वर्णन हैं। दस सर्ग मात्रिक छनद में, एक सर्ग मात्रिक छनद में, एक सर्ग वर्णिक छनद में है। बाल्मीकीय रामायण, रामचरित मानस, आध्यात्म रामायण मानस–गूढ़ार्थ–चन्द्रिका, मानस–पीयूष आदि कई ग्रन्थ को पढ़कर इस अहिल्या को लिखा गया है। चौपाई, दोहा, हरिगीतिका, छप्पय, ताटंक, मंत्रगयन्द सवैया छनद के अलावे 16 मात्रा, 20 मात्र, 32 मात्रा उपमात्रा के छनद के माध्यम से इस प्रबन्ध काव्य को लिखा गया है।

अहिल्या नारी–विमर्श की एक महत्वपूर्ण मगही प्रबंध काव्य की पुस्तक है जिसमें नारी जगत (जीवन) की अनेक समस्याओं को इस पुस्तक में उद्धत किया गया है। राम साहेब ने अपनी भ्श्रूमिका में जो लिखा है, वह सम्पूर्ण समस्याओं का निचोड़ है। नारी एक जिन्दगी है। उसे अपने तरह से जीने का अधिकार है किन्तु पुरूषवादी समाज उसे अपनी सुख–सुविधा के लिए उपयोग की वस्तु समझता है जिसका इस पुस्तक में कठोर रूप से आलोचना की गई है। नारी समस्याओं को निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत आवद्ध किया जा सकता है–

(1) नारी शोषणः– नारी का शोषण पति बनकर पुरूष पत्नी का, बेटा बनकर माँ का, भाई बनकर बहन का, देवर बनकर भाभी का शोषण करता है। उसके शोषण के कई रूप हैं– उसे अपमानित करना, गाली गलौज करना, परिवार के कर्मकांडों में उचित स्थान न देना, शिक्षा से बंचित रखना, बीमार पड़ने सही इलाज नहीं करना को ऑनर किलिंग, उसकी बातों की उपेक्षा करना, स्वास्थ संतुलित भोजन न देना, घर से बाहर कर देना, पत्नी के रूप में समान

अधिकार की बात करने पर दण्डित करना, जान से मारने की धमकी देना आदि ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो नारि के शोषण को इंगित करते हैं–

''गाल उदासल कुछो भुलायल, लगय कुकुर कटार हे।

चढ़ल बसन्त लगई कटावन, बन सगर पतझड़ हे।

आँख तर सदा नागिन लोटे, छोड़ई फुफकार हे।

झामर भेल मोर देहिया, जहर सउँसे कार हे।''

नारी उत्पीड़न :– उत्पीड़न एक ऐसी भावना है जो पुरूष वर्ग के मन–मस्तिष्क में बैठा रहता है। नारी अपने–घर–परिवार के लिए सबकुछ समर्पित भाव से कार्य करती करती रहती है लेकिन पुरूष वर्ग उसके द्वारा बनाये गये भोज पदार्थ को हेय बताना, उसके मायके को लेकर सदा उलाहना देना, कोई भी कार्य करे उसे देखकर नारी को घिनाना, ऐसी–ऐसी बातें करना जिससे वह भीतर ही भीतर जलती–भुनती रहे। बेटा जगह बेटी जनम देने पर उसे पीड़ा पहुँचाना– मतलब यह कि ऐसी–ऐसी बातें करना, व्यवहार दिखाना जिससे वह मन ही मन तपड़ते रहे, अपने दुख–पीड़ा को व्यक्ति भी न करें जैसे लड़की में या अनाज में घुन लग जाता है, उसी तरह उसकी जीनगी में घुन लग जाता है। यह है नारी उत्पीड़न की धारणा। कवि घमण्डी राम ने इसे निम्न प्रकार व्यक्त किया है–

''अन्ने अहिल्या चिन्ता डूबल, कब से सोच रहल हे।

अतना अत्याचार पुरूष के, धरती डोल रहल है।

सदा गुलामी नियम बनायल, खूँट, बैल बनल हे।

दासी बनके रहे सदा घर, पाँव जूती बनल हे।

कउआ हँकनी बनाके, नारी सदा जाम हे।

छलका करे जाम जीवन में, सामान बिन दाम हे।''

अहिल्या छठा सर्ग,

नारी उपभोग वस्तुः– पुरूष प्रधान समाज में नारी को एक वस्तु समझा जाता है। वह एक नींबू जिसे गारकर फेंक दिया जाता है।उसी तरह नारी के सौन्दर्य का रसपान कर, देहरस को उपभोगकर सेक्स (संभोग) की पूर्तिकर अंग अंग का चुम्बन कर, उसके बाहरी–भीतरी काया का स्पर्श आनन्द लेकर, अपनी सेज पर सौन्दर्य से पूर्ण पुष्प का विछावन कनाकर उसे उच्छिष्ठ समझकर फेंक दिया जाता है। कवि घमण्डी राम की निम्न पँक्तियाँ द्रष्टव्य हैं–

''नारी नर के भोग वस्तु हे, अइसन नियम बनल हे।

सुगना बन्हल हे पिंजरा में, अइसन जाल बिछल हे।

खुशबूदार जागीर नर के, जीवन के आनन्द हे।

ई नमकीन मन चाही वस्तु जगती के आनन्द हे।

नारी सुन्दर सेज मरद के, चाभे रस ही रस हे।

ई अनुपम सौगात सृष्टि के, दिल के स्वर सरस हे।''

अहिल्या, छठा सर्ग,

नारी–दुर्गतिः– पुरूष वर्ग नारी को घर, परिवार, पड़ोस, समाज, राज्य, देश में ऐसी स्थिति में बनाकर रखता है कि उसकी अस्मिता ही मिटती जाती है। नारी एक जीवन है, सजीव प्राणी है। उसकी भी अभिलाषा होती है कि सामाज में उसकी पहचान हो, लोग उसकी प्रतिभा के कायल हों किन्तु क्योंकि पुरूष चाहता है वह पुरूष (पति) की छाया बनकर रहे। पति के सामने वह सदा एक नगण्य प्राणी बनकर रहे। इसीलिए उसे ऊँचे पद पर नहीं देखना चाहता। निर्भया कांड, मुजफ्फरपुर बालिका कांड, रास्ता चलते उसका अपहरण, लड़कीर के साथ

बालात्कार, गैंग रेप, उससे रास्ते में धन–सम्पति, रूपया पैसा झपट लेना, हर औरत का पीछा करना, व्यंग्य कसना, अपशब्द बोलना, स्कूल से छूटते लड़कियों को तंज कसना, सिटी बजाना, उनका आंचल (ओढ़नी) खिंच लेना, पकड़कर अभद्र व्यवहार करना आदि ऐसी हरकते हैं जो नारी दुर्गति के गर्त में ले जाकर डूबो देती हैं।

''साड़ी फाटल चोली फाटल, बांस–बबूर सटल हे।

बिढ़नी खोंता सांप छुछुन्दर, अंगे अंग फटल हे।

चिकन चाकन देहिया सुन्दर, कोला कार बनल हे

चिथड़े चिथड़े फाटल सखिया, लहू–लुहान बनल हे।

पुरूष समाज हमनी के शत्रु, नारी सब समझित हे।

नारी पाँव के जूती इहे, जुग–जुग से आवित हे।

भोग वस्तु बनल रहे ई सब उनकर सोच हे।

छादे–बापे कुचलित अयलन, आझो इहे खोंच हे।''

'अहिल्या' सातवां सर्ग

महिलाओं का अनैतिक व्यापार:– यौनशोषण, बंधुआ घरेलु मजदूर धोखे से विवाह करना, यौन पर्यटन, अंगों का व्यापार, नारी के अंगों का विज्ञापन, ऊँट की दौड़ आदि कराने के लिए महिलाओं एवं बच्चों के अनैतिक व्यापार करने और अत्यन्त असहाय सदस्यों पर किए गए अमाननीय अपराध की घटनाओं में तेजी आ रही है। जो समाज व राष्ट्र को कलंकित करता है।''

स्त्री–विमर्श, डॉ. कृष्ण चन्द्र चौधरी,

डॉ0 कृष्ण चन्द्र चौधरी ने अपनी पुस्तक नारी–विमर्श (आधुनिक युग का नया क्षितिज) मैं नारी के उपर होने वाले अत्याचार और अन्याय, समस्या और संकट को बड़े ही विस्तारित ढंग से प्रस्तुत किया है।

इसी तरह घमण्डी राम अपनी पुस्तक 'अहिल्या' में नारी की समस्याओं का विस्तार करते हुए लिखते हैं–

''कतना खून घूँट हम पीऊँ। बान विंधायल जिनगी जीऊँ।।

सुन्दरता जब भूषण नारी। सुन्दर फूल खिले फलवारी।।

सुन्दरता जीवन के घाती। राह चलल मुश्किल दिन राती।।

जिये–मरे के सवाल हारीं चचा रिसिवर संकट भारी।।

अहिल्या, आठवाँ सर्ग,

व्यंग्य बान चलाना– महिलाओं को हीन दृष्टि से देखने का एक और तरीका है। घर में या बाहर नारी के लिए कई व्यंग्यपूर्ण शब्द और मुहावरे गढ़ लिए गए हैं। वे शब्द और मुहावरे ऐसे हैं जिनके दुहराने शर्म आती है किन्तु पुरूषवादी समाज हर क्षण उनका प्रयोग करता है। जैसे–कुलक्षिणी, कुलकलंकिनी, कुलनाशिनी, कुलघातिन, चुड़ैल, प्रेत, डाकनी, पिचाशानी, डायन, भरत खौकी, पूतखौकी, अभागिन, नटिन, खटकिन, ''नारी अछूत बरजाती है नारी पैर की जूती है'' ''नारी अवगुण खान, नरक बसे मुए जान'' ''नारी घर घर के दाई, डायन विचाशिन छाया मिरतुक पाइ''

''नारी रखैल नर चाहे हमेशा, सरग सरब सुख पाय हरमेशा।''

''नारी मूए धरती अगराय'' बेटी जनमें धरती धँसे। महान नारी चिन्तक महाश्वेता देवी का कहना है कि नारियों को कोखा से मरण तक 17 तरीकों से मारा जाता है। पुरूषवादी समाज

यह घृणित आचार समाज को कलंकित करता है। देश की प्रगति को वाधित करता है। देखा जाय–

''नारी के नभ समुझे दासी। लड़की भात खिआवे बासी।।

लड़की जान कोख में मारी। फाटल पेन्हावे सारी।।

सांसत देत मुआवे घाटी। देवन के हम बलि के पाटी।।

जुती पाँव समझे पाठा। ढोल बजाके बजवे साठा।।

लेते जनम झुक जाय माथा। फँस जाय धरती धरम साथा।।

छाती दूध में मिलावा। सउरी में सब नून चटावा।।

अस्पताल डाक्टर मिलमारे। तेल छिड़क के जिअते जारे।।

डगरी हाफडी जियत ढूँसा। आँख–नाक में कोंचत भूसा।।

अहिल्या, अठवाँ,

बालात्कार की समस्याएँः– आज समाज में कहीं भी नारी सुरक्षित नहीं है। वह एक ऐसी वस्तु जिसे छीनकर पुरूषवर्ग को लेकर सदैत डरी सहमी रहती है। रास्ता चलते लड़की से यौन शोषण, महिला के साथ बलात्कार, गैंग रेप, उसकी अस्मत के खिलाफ पुरूष वर्ग का आतंकी रूप, ये सारी ऐसी समस्याएँ है जिने कारण वह घर से बाहर निकले में भयभीत रहती हैं। डॉ. सीमा रानी अपनी पुस्तक 'नारी समस्या और असामाधान में लिखती हैं–

''6 सितम्बर, 2006 के हिन्दुस्तमान' समाचार पत्र के संपादकीय पृष्ठ पर वृंदा करात ने 'सुरक्षित शहर, असुरक्षित औरत' नामक एक टिप्पणी में लिखा है कि 'जब राजधानी में प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है, हवा और पानी दोनों प्रदूषित हो जातें हैं तो पर्यावरण का स्वास्थ्य

सुधारने के लिए सुप्रीम कोर्ट इसमें अखल देता है लेकिन जब महिलाओं के प्रति अपराध–होता है और शहर का नैतिक माहौल प्रदर्शित होता है तो चारों तरफ खामोशाी क्यों छा जाती है? ''

'नारी की समस्या एवं सामाधान,

इसी तथ्य की पुष्टि करते हुए मथुरादत पाण्डेय अपनी पुस्तक 'अहिल्या में लिखते हैं कि किस तरह विश्वसुन्दरी कन्या बालात्कार से भयभीत है–

''दुनिया मुझको मानती है विश्व सुन्दरी धन्य।

मुझे सताता डर सदा, बालात्कारिता–जन्य।। 34

पुममा सालंकार जो बनी सेज–समान।

वही उपेक्षित मारी को बनती दंड समान।। 35।।

हाय! सखी रक्षा करे मेरी काजल–घोल।

लाज वचा दे स्यात्! तब उसकी मोह पर झोल।।36

अहिल्या, तीसरा सर्ग,

इस तरह अन्य ग्रन्थों में भी कवि घमण्डी राम द्वारा उठायी गई नारी समस्याओं का समर्थन और दिग्दर्शन मिलता है।

भ्रूण हत्याः– नारी जीवन की एक सबसे कठिन समस्या है भ्रूण हत्या। बच्ची जब माँ की कोख में होती है, उसका डाक्टर से लिंग परीक्षण कर सूई देकर या दवा देकर उसकी हत्या करवा दी जाती है। जब पेट में बच्चा होता है तो उसके लिए नारी को (माता) को आदर–सम्मान और खाने–पीने के लिए उसे भरपूर पौष्टिक भोजन दिया जाने लगता है। मथुरा दत पाण्डेय लिखते हैं–

टहनी पर था फूल खिला।

उड़ा पराग साथ सुरभि ले मधुकर को सन्देश मिला।

गुंजन भरता, कविता झरता पहुँच गया वह, मिटा गिला।

देकर मधुमय दंश अधर पर खिला दिया क्या दिया जिला।

खरा माल मकरन्द परस्पर इच्छा भर पी चैन मिला।

हो चाहे दिन चाँदनी रहता चन्दा हिला–मिला।

किन्तु फूल का सूखा डंठल ज्ञान–कोश में लिखा मिला।

अहिल्या, छठा सर्ग,

ऊपर की पद्य पँक्तियाँ बतलाती हैं कि जिस तरह मरहन्द को लेकर गुजार करता भौरा उठ जाता है। अहिल्या फूल विहिन होकर सूखे डंठल की भाँति रह जाती है। यही स्थिति होती है भ्रणहत्या होने वाली बच्ची का। घमण्डी राम लिखते हैं

''लड़कि जान कोख में मारी। फाटल तन पेन्हावे सारी।''

अहिल्या, आठवाँ सर्ग,

''मैं थक जाती हूँ

मैं बंध जाती हूँ

गठरी की तरह

देखो, समय नहीं रूकेगा

मुझे चलने दो, दौड़ने दो

गिरने दो, उठने दो

मुझे तुम्हारे साथ चलना है।''

नारी की समस्याएँ सामाधान,

कितनी करूण गाथा है बच्ची की वह कहती है मुझे धरती पर आने दो, चलाने दो, गिरने दो उठने दो। मुऐ भी तुम्हारे साथ चलना है किन्तु दुरिन्दा पुरूषवादी समाज कोख में ही उसे मार डालता है और बेटे के लिए सर्वस्व जुटाना और उसे भोजन के लिए समस्त सुख–सुविधाएँ प्रदान करता है।

उपसंहार

इस शोध कार्य को सम्पन्न करने में मुझे बहुत लालसा थी क्योंकि नारी–विमर्श से सम्बन्धित यह शोध कार्य था। एक नारी होने के नाते जहाँ तक प्रयास करना पड़ा किया है। विभिन्न दुर्लभ पुस्तकों को जुटाना, विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं को एकत्र करना, बड़े–बड़े विद्वानों के विचारों से आवगत होना, फिर अध्ययन और लेखन कार्य पूरा करना मेरे लिए प्रारंभ में जटिल कार्य दिख पड़ता था किन्तु जैसे–जैसे अध्ययन बढ़ता गया, रूचि बढ़ती गई और यह शोधपूर्ण होकर आप सबों के समक्ष पस्तुत है। ''उद्यमेनहि सिध्यन्ति कार्याणि, न मनोर थे।'' यह मेरे जीवन का मूल मंत्र था। मैं अबोध बालक की तरह सीढ़ियों को छूती, लाँघती गयी। प्रथम सर्ग से ग्यारहवें सर्ग तक आते आते जिन्दगी उल्लास से भर गई। कवि, महाकवि घमण्डी राम का कितना गुण गाऊँ जिन्होंने इस काव्य को इतने सरल ढंग से प्रस्तुत किया है। कि कोई भी भाषा भाषी इसे पढ़कर समझ सकता है। इस कार्य के लिए राम साहब की पुस्तक अहिल्या के साथ–साथ तीन और प्रबन्ध काव्य का सहारा लिया गया ताकि राम साहब का कथ्य प्रमाणित हो जाए और हरसर्ग प्रमाणित होता गया।

पहली पुस्तक है 'अश्मा' हिन्दी में लिखित नौ सर्गों की पुस्तक है जो अहिल्या पर आधारित खड़ी बोली में लिखी गयी है। मुजफ्फरपुर जिसका प्रथम संस्करण 2003 में आया। इसके मुदक है बी.के. ऑफसेट, शाहदरा दिल्ली। 115 रूपये उन्होंने इस पुस्तक को अपनी आत्मजा

'अश्मा' को समर्पित किया है। इस सुप्रसिद्ध काव्य की रचयिता जाने–माने कई पुस्तकों के रचयिता विविध समान से सम्मानित, आकाशवाणी, दूरदर्श, कैसेट, फिल्भ दुनिया' से जुड़े महान विदुषि कवयित्री डॉ. शान्ति जैन है। एच.डी.जैन कॉलेज आरा में संस्कृत विभागाध्यक्ष है। मैंने इन पुस्तक का सहारा लिया, मैं उनको शतशः नमन आर्पित करती हूँ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1) ठाकुर वा. वा., (संपा.),— होळकर षाहीच्या इतिहासाची साधणे, भाग 1 ला, प्रकाषक, होळकर गव्हर्नमेंट प्र`स इंदूर, 1944, पृ. 1

2) कित्ता, 1–1

3) षर्मा, हिरालाल.मतकर, गणेष.(संपा.),—अहिल्या स्मृती प्रथम पुश्प, प्रकाषक, सार्वजनिक देवी श्री. अहिल्या जन्मोत्सव समिती, 135/2, मोती तबेला इ ंदौर, 1988,पृ.8–9

4) सरदेसाई गो. स.,– मराठी. रियासत, खंड 2, पॉप्युलर प्रकाषक मुंबई,तिसरी आवृत्ती, इ.स. 1988, पृ. 9

5) कुळकर्णी अ. रा.,—मराठे आणि महाराश्ट्र, प्रकाषक डायमंड पब्लिकेषन्स, पुण `, प्रथम आवृत्ती, जानेवारी 2007, पृ. 245

6) पारसनिस, द. ब., – मह`ष्वर दप्तराची बातमी पत्रे, भाग 2, निर्णय सागर छापखाना, मुंबई, 1911, पृ. 113

7) उपरोक्त, क ुळकर्णी अ. रा., — मराठे आणि महाराश्ट्र भाग 2, पृ. 245

8) धर्मभास्कर, मे–जून 1975, पृ. 93

9) कित्ता,पृ.93

10) गुजर, डॉ. यादव. – मल्हारराव होळकर व त्यांचा काळ, प्रकाषक यादव गुजर, नागपूर, प्रथमावृत्ती, 1991, पृ. 129

11) कित्ता, पृ. 129

12) षेविका, प्रकाषन, कर्मयोगी देविअहिल्याबाई होळकर, पृ. 20

13) केळकर, य. न.,(संपा.),– होळकरांची कैफियत, हनुमान प्रकाषन, पुणे, 1954, पृ. 120

14) उपरोक्त, ठाकूर वा. वा., भाग 1, पृ. 129–130

15) ठाकुर, वा. वा., (संपा.),— होळकर षाहीच्या इतिहासाची साधणे, भाग 2, प्रकाषक, होळकर गव्हर्नमेंट प्रेस इंदूर, 1944